MA (Sem-II)
MPOLCC-07

POL. SCIENCE

Dr. S. B. Kumar

Emerging Issues :- Ethnic Resurgence and Identity War

उभरते हुए मुद्दे : संजातीय पुनरुत्थान और पहचान युद्ध

What is ethnicity? जातीयता अथवा संजातीयता अथवा नस्लवाद क्या है?

ethnic शब्द लैटिन शब्द ethniko से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है सामान्य पहचान। संजातीयता एक सामान्य पहचान की भावना को व्यक्त करता है जिसमें लोगों के समूह द्वारा अपने आपको दूसरे समूहों से अंतर करने के लिए व्यक्तिपरक, सांकेतिक अथवा प्रतीकात्मक प्रयोग होता है। यह एक अस्थायी अवधारणा है जो संस्कृतियों, स्वरों और राष्ट्रीयताओं की अभिव्यक्ति या समर्थन है। इसका संबंध विशिष्टता के विचार से है। इन शब्दों की परिभाषा खास सामाजिक समूह के लोगों/सदस्यों में सामान्य पहचान की जागरूकता के रूप में की गई है। एन्थोनी डी. स्मिथ ने संजातीयता के अग्रलिखित मानदंडों की बात की है – समूह के सदस्यों और बाहरी व्यक्तियों – दोनों द्वारा पृथक समुदाय के रूप में पहचाने जाने के लिए विशिष्ट समूह नाम, समूह के सदस्यों में ऐतिहासिक स्मृतियों की मौजूदगी, पीढ़ी कथा में समूह के सदस्यों का सहभाजित विश्वास, विशिष्ट सहभाजित संस्कृति, निश्चित भूभागीय ~~संबंध~~ क्षेत्र या 'स्वदेश' से संबंध, सामान्य भाई-चारे की भावना और सामान्य धर्म।

संजातीय पुनरुत्थान का स्वरूप या विस्तार → विश्वभर में हाल ही के दशकों में संजातीय राष्ट्रवाद में आवेग (momentum), राज्यों के अंदर और सीमापार संघर्ष तथा हिंसा की मात्रा में बढ़ोतरी ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में 192 प्रभुसत्ता संपन्न राज्यों और लगभग 20 से अधिक गैर प्रभुसत्ता संपन्न राज्यों से निर्मित राजनीतिक सत्ता की मौजूदगी है और इसमें लगभग 862 प्रमुख और तीन हजार से अधिक छोटे संजातीय समूह हैं। मुश्किल से कोई ऐसी संजातीय समूह है जो अन्य समूहों के साथ मिलकर रहने की कला में प्रशिक्षित हो। 192 राज्य क्षेत्रीय प्रभुसत्ता संपन्न राज्यों में केवल 15 संजातीय समूह हैं जिसमें से आधे सीमा पार संघर्ष में शामिल, जहाँ पड़ोसी राज्यों में फैले हुए संजातीय समूह रहते हैं। विश्लेषण कर्ताओं के अनुसार विश्व की जनसंख्या के 4 प्रतिशत से भी कम उन राज्यों में रहते

Scanned with CamScanner

हैं जिनकी सीमाएँ संजातीय सीमाओं के अनुरूप हैं। राजनीतिक दशाओं में रहने वाले विश्व जनसंख्या के 96 प्रतिशत से अधिक वहाँ रहते हैं जो उनके अपनी ~~इच्छा~~ स्वाभाविक इच्छा या आत्मनिर्णय के अनुकूल नहीं है। इस प्रकार विभिन्न स्तरों पर संयोजनवाद (irredentism) द्वारा अनेक तरीके से असंतुष्ट हैं।

समस्या के परिणाम को इस तथ्य से भी मापा जा सकता है कि द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति से आजतक बहुत लोग राज्यांतरिक और अंतः-राज्य संघर्षों तथा हिंसा में अपने प्राण गंवा चुके हैं और संजातीय संघर्ष और हिंसा में 75 प्रतिशत से भी अधिक लोग मारे गए हैं। इसलिए संजातीय संघर्ष और हिंसा न केवल सबसे अधिक गंभीर है बल्कि सबसे अधिक जटिल समस्या भी है जिसका सामना मानव जाति कर रही है। संजातीय विविधता जीवन को कई प्रकार से प्रभावित करती है। संजातीय ~~संघर्ष विविधता~~ संघर्ष उन बंधनों को क्षति पहुँचाता है जो शिष्टाचार बनाए रखते हैं और यह ज्यादातर हिंसा की जड़ में होती है जिसके फलस्वरूप लूटपाट, मौतें, बेघर और बड़ी संख्या में पलायन होता है।

आधुनिकीकरण और संजातीय पुनरुत्थान एवं संघर्ष → संचालन की दृष्टि से आधुनिकीकरण का अर्थ है शिक्षा, प्रति व्यक्ति आय, शहरीकरण, राजनीतिक सहभागिता, औद्योगिक रोजगार एवं मीडिया सहभागिता में का अपेक्षाकृत उच्चतर स्तर प्राप्त करना। जैसे ही आधुनिकीकरण की प्रक्रिया स्वतः खुलती है तो यह राज्य क्षेत्रीय और गैर राज्य क्षेत्रीय दोनों संजातीय समूहों में सामाजिक गतिशीलता की दशाएँ उत्पन्न करती है। आधुनिकीकरण और सामाजिक गतिशीलता की शक्तियाँ राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में पृथक पहचानों को आत्मसात कर सकती हैं लेकिन इसने मुख्य निष्ठा (राष्ट्रीय पहचान) को संजातीय समूह से राज्य में हस्तांतरित करने में विफल रही है। विश्व में संजातीय अलगाव के पैटर्न (प्रतिमान) के बारे में उपलब्ध साक्ष्य इस बात के सूचक हैं कि सामाजिक संचार में सामग्री बढ़ती है और गतिशीलता (mobility) की प्रवृत्ति सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ाने की तथा अंतः संजातीय संघर्ष तेज करने की होती है।

सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं को कम करने, संकर सांस्कृतिक और मिश्रित समाज बनाने की बजाय सामाजिक गतिशीलता तथा परिवहन और संचार में प्रौद्योगिकी क्रांति ने बढ़ी हुई पृथक सांस्कृतिक-चेतना और पहचान जागरूकता को उत्पन्न किया है। आधुनिकीकरण संजातीय समूह में पहचान

Scanned with CamScanner

जागरूकता उत्पन्न करता है जिसे संजातीय विशिष्ट वर्ग संजातीय समूहों के अंदर राज्य के विरुद्ध राजनीतिक प्रयोजनों के लिए तैयार करता है। आधुनिकीकरण और सामाजिक गतिशीलता संजातीय आधार पर समूह पहचान को सुदृढ़ करता है और अन्य संजातीय समूहों से भेद के लिए जागरूकता पैदा करता है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने अप्रत्याशित रूप से राजनीतिक और आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा भी उत्पन्न की है। संक्षेप में, आधुनिकीकरण ने विभेदों को तेज किया है, पहचान जागरूकता को सुदृढ़ किया है तथा अंतर संजातीय एवं अंत: संजातीय हिंसा को पैदा किया है।

तर्कहीन सीमाएँ: राज्य प्रणाली के लिए चुनौती :→ राजनीतिक सीमाओं की तर्कहीनता की समस्या बहुत सारे संजातीय संघर्षों के मूल में होता है जिससे दो या अधिक राज्यों में विभाजित संजातीय समूह या तो संजातीय एकता के लिए या मूल राज्य से स्वतंत्रता या दोनों के लिए प्रयास करते हैं। वर्तमान संजातीय संघर्ष की घटना विश्व भर में राज्य की सीमाओं के स्वरूप के कारण भी है। राज्य सीमाओं के परिसीमन और सीमांकन में बहुधा संजातीय बंधन (ethnic bond) या भौगोलिक कारकों की पूर्णत: उपेक्षा की गई। इराक, ईरान, टर्की, अर्मेनिया और सीरिया में कुर्दों का, ईरान, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में बलूचों के बीच, पख्तूनों को अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच, विभाजन इसके दृष्टांत हैं।

उपनिवेशीय अवधि के दौरान ये विभाजित संजातीय समूह अल्पसंख्यक थे तथा उपनिवेशवादियों ने इन्हें प्रमुख समूह के विरुद्ध रखा। बाद के दिनों में जब उपनिवेशवाद का दौर खत्म हुआ तो ये अल्पसंख्यक संजातीय समूह अपनी विशिष्ट पहचान के लिए संघर्ष की दुनिया में कदम रखा।

आधुनिक राज्य की हस्तक्षेपवादी भूमिका और परंपरागत स्वायत्तता की क्षति: आधुनिक राज्यों की हस्तक्षेपवादी नीति का निरंतर विरोध होने लगा। जनजातियों, संजातीय समूहों तथा धार्मिक समुदायों ने राज्य की इस भूमिका को राज्य द्वारा शक्ति के केन्द्रीकरण के रूप में देखा और अपनी पृथक पहचान के लिए संकट के रूप में समझा। पूर्व में जब कभी और जहाँ कहीं राज्य ने कठोर नीतियाँ अपनाई, प्रभावित संजातीय समूह या समुदाय ने इसका विरोध किया, जिसके परिणामस्वरूप राज्य

Scanned with CamScanner

द्वारा रक्तपात और संहार किया गया। केन्द्रीय एशिया में रूसी जारों द्वारा रूसीकरण आंदोलन और भारत में हिन्दुओं और सिखों के विरुद्ध मुगल शासकों की ज्यादतियाँ उपर्युक्त स्थिति को प्रमाणित करने वाली ऐतिहासिक वास्तविकताएँ हैं।

आधुनिक राज्य की संजातीयता के प्रति आत्मसातीकरण की नीति :-

आधुनिक राज्य की ~~आत्मसाती~~ हस्तक्षेपवादी और अंतः प्रवेशी क्रियाकलापों का संचित प्रभाव और राष्ट्र निर्माण में उसकी आत्मसातीकरण की नीतियों से उत्पन्न राज्य के संजातीय विरोध ने राज्य व्यवस्था के अंदर कट्टरपंथियों (fundamentalist) को सुदृढ़ किया। इससे संजातीय पहचान और स्वायत्तता को चुनौती बढ़ने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि संजातीय समुदाय अन्याय, भेदभाव और शोषण के लिए मूल राज्य को दोषी मानने लगे। सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषायी, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक इत्यादि मांगे उग्र रूप धारण करती हैं जिसके प्रत्युत्तर में राज्य का दमन चक्र शुरू होता है। युद्धों का अंतर्राष्ट्रीयकरण जैसा कि कश्मीर के साथ हुआ, ~~सष्ट निर्मा~~ मानवाधिकारों के उल्लंघन की शिकायतें इत्यादि के द्वारा संजातीय समूह अंतर्व्यवस्था में सहानुभूति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं और विदेश में रहने वाले ~~समूह~~ संजातीय समूहों के कार्य और क्रियाकलाप को निरंतर वैधता मिल रही है। पाकिस्तान, युगोस्लाविया, चैकोस्लोवाकिया इत्यादि देशों में संजातीय आधार पर विखंडन उभरती हुई अंतर्राजनीतिक व्यवस्था का सुदृढ़ सूचक है।

तृतीय विश्व के देशों में शासकों ने संजातीय आकांक्षाओं और इसके परिणामस्वरूप विद्रोह का नियंत्रण ~~उपयुक्त ढंग से नहीं किया~~ करने के लिए कोई गंभीर प्रयास नहीं किए ~~गए हैं~~। बल्कि शासकों ने आत्मसातीकरण की नीतियों को अपनाया और प्रायः संजातीय प्रतिरोध के सैनिक हल का सहारा लिया। इसके फलस्वरूप संजातीय समूहों ने हिंसात्मक संघर्ष का और आतंकवाद का मार्ग अपनाया एवं स्वायत्तता के बदले पूर्ण स्वतंत्रता की माँगें रखी।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिकीकरण की शक्तियों ने संजातीय संबंधों को कम करने के बदले उन्हें बढ़ाया है। चारों ओर प्रतिस्पर्द्धा की तीव्रता जो आधुनिकीकरण का अंतिम उत्पाद है तथा सामा-

Scanned with CamScanner

जिक-राजनीतिक चेतना उसके स्वाभाविक परिणाम हैं, संजातीय आधार पर मानव जाति को लामबंद (mobilization) करने में उत्प्रेरक का काम किया। औद्योगिकोत्तर समाज और इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यम, परिवहन और संचार में क्रांति ने सीमित जागरूकता को सुदृढ़ किया है। वास्तव में जागरूकता और प्रतिस्पर्द्धा ने प्रजातीय भाषायी, धार्मिक एवं वैचारिक पहचान के बदले संजातीय पहचाने उत्पन्न की।

आधुनिकीकरण ने कल्याणकारी उपायों के आविष्कार को आसान बनाया है। इससे संजातीय समूहों की स्वायत्तता क्षीण होती है और फलस्वरूप सत्तावादी केन्द्रीकरण उत्पन्न होता है जो अंततः संजातीय समूहों के द्वारा हिंसक प्रतिरोध में व्यक्त होता है। विकसित देशों ने संजातीय प्रतिरोध को समायोजन के माध्यम से नियंत्रित किया जबकि तृतीय विश्व के राज्यों ने इस तरह के प्रतिरोध को राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए खतरे ~~समझा~~ के रूप में देखा। इससे निबटने के लिए तृतीय विश्व के राज्यों ने आत्मसातीकरण की नीतियाँ अपनाई और सैन्य कार्रवाई करने में भी परहेज नहीं किया।

तृतीय विश्व के राज्यों के बीच तर्कहीन सीमाओं और असंख्य आपसी विवादों ने उपराष्ट्रीय समूहों को या मूल राज्य को पर राष्ट्रीय संबंध बनाने और उनसे सहायता लेना आसान तो बनाया लेकिन अन्यथा आंतरिक संघर्ष का अंतर्राष्ट्रीयकरण हुआ। आज संपूर्ण राष्ट्रीय व्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था अभूतपूर्व मात्रा में संजातीय अथवा नस्लीय पुनरूत्थान का मुकाबला कर रहा है जो विश्व शांति के लिए खतरा है।

Identity War (पहचान के लिए युद्ध अथवा संघर्ष)

पहचान से संबंधित संघर्षों की समस्या अति प्राचीनकाल से मानव जाति को परेशान कर रहा है लेकिन आधुनिक काल में यह ज्यादा व्यापक और अधिक हिंसात्मक हो गया है। विश्वभर में चल रहे संघर्षों में से लगभग 75 प्रतिशत से अधिक पहचान से संबंधित हैं। इन पहचानों से संबद्ध संघर्षों की गतिशीलता और आयाम इतने गंभीर हैं कि वे अधिकांश आधुनिक राष्ट्र-राज्यों की सामाजिक संरचना और राजनैतिक एकता व अखंडता के लिए खतरा उत्पन्न कर रहे हैं। इनमें से अधिकांश पहचान से संबद्ध संघर्ष संजातीय अथवा नस्लीय पहचान के संकट पर निर्भर हैं।

Scanned with CamScanner

* 1991 में विश्व में 37 मुख्य सशस्त्र संघर्ष हुए थे जिसमें से 25 आंतरिक संघर्ष थे। उनमें से अधिकांश पहचान के लिए युद्धों के रूप में संजातीय आधार पर थे और ये पृथकतावादी (Separatist) बन गए।

पहचान सभी व्यक्तियों में जन्मजात और अनजान व्यवहार के रूप में माना जाता है। व्यक्ति मनोवैज्ञानिक सुरक्षा प्राप्त करने के लिए पहचान करने का प्रयास करता है। यह ऐसी भावना उत्पन्न करता है कि व्यक्ति विश्व में शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा यहाँ तक कि आध्यात्मिक रूप से सुरक्षित है। व्यक्ति इसी सुरक्षा को बनाए रखना चाहता है और जब कभी इस पर संकट आता है तो पहचान के लिए संघर्ष की शुरुआत होती है। नीचे कुछ कारकों (factors) की चर्चा की गई है जिसके कारण पहचान के लिए युद्ध अथवा संघर्ष हो सकते हैं:

Causes for Identity War

1.) पहचान खोने का भय (Fear from lost of identity) :- ऐसा मुख्यतया मनमाने तरीके से राष्ट्रीय प्रदेश निर्माण अथवा नई राजनीतिक रचना में संजातीय समूहों को अपनी पहचान खोने का भय सताने लगता है। भारत में नागा, मिजो, असमी और पाकिस्तान में बलूच और पख्तूनों ने पहचान खोने के भय से सशस्त्र संघर्ष किया जब नए राज्य ने राष्ट्रीय संदर्भ में एकीकरण प्राप्त करने के लिए प्रयास किया।

2.) आत्मसातकरण का भय (Fear of getting swamped / Fear of internalisation of Identity) :- अल्पसंख्यक संजातीय समूह को बहुसंख्यक की ओर से आत्मसातकरण का भय रहता है। भारत में पंजाबी सूबा या सिख होम लैण्ड के लिए सिख समुदाय की मांग और पाकिस्तान में सिन्धु देश के लिए मांग का उद्देश्य 'हमें' और 'उन्हें' के बीच सीमा का राज्य क्षेत्रीय अंकन द्वारा उनकी पहचान बचाने के लिए है।

3.) अवहेलना का भय (Fear from ~~violation~~ ignorance of Identity) :- यह मुख्यतया देशी लोगों पर बाहरी समूह के प्रभुत्व के फलस्वरूप होता है। ऐसी स्थिति में देशी लोगों की स्थिति निष्प्रभावी हो जाती है और अपने ही राज्य क्षेत्र में वे अल्पसंख्यक की स्थिति में पहुँच जाते हैं। जैसा कि उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के रेड इंडियन के मामले में हुआ है।

4.) आपेक्षिक वंचन और भेदभाव की अनुभूति (Feelings of discrimination and negation) :- अल्पसंख्यक अधिकारों को अस्वीकार करने और राष्ट्रीय जीवन और सरकारी पदों में भेदभाव करने के परिणामस्वरूप अल्पसंख्यक संजातीय समूहों को वंचित रखा जाता है और उनके साथ भेदभाव किया जाता है। जैसा, कि श्रीलंका में तमिलों, बांग्लादेश में हिन्दुओं और पाकिस्तान में मुहाजिरों एवं बलूचों के मामले में भेदभाव होता है।

5.) विवशता (शक्तिहीनता) की भावना (Feelings of helplessness) → शासक वर्ग द्वारा अपनाए गए बहुमतवाद से अल्पसंख्यकों में शक्तिहीनता की भावना उत्पन्न होती है जिससे अल्पसंख्यकवाद का जन्म होता है। भारत में सिख, कश्मीरी, श्रीलंका में तमिल, पाकिस्तान में सिंधी बलूच इस अल्पसंख्यकवाद के आदर्श उदाहरण हैं।

हाल के संजातीय संघर्ष या पहचान के लिए युद्ध की बढ़ती हुई संख्या भविष्य में परिस्थितियों का स्पष्ट सूचक है। एक अनुमान के अनुसार *

Scanned with CamScanner